समाज विकासमाला

ईश्वर का मंदिर

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ४६

ईश्वर का मंदिर

नार्मन निनेल का एक शिक्षाप्रद नाटक

भावानुवादक
श्रीकृष्ण

संपादक
यशपाल जैन

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने ग्राज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों ग्रादमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ग्रोर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही ग्रासान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार ग्रौर बोलचाल की हो ग्रौर जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी ग्रासान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय ग्रौर छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद ग्रा रही हैं, इससे हमें बड़ा ग्रानंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक ग्रौर उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे ग्रौर इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

आपने नाटक बहुत पढ़े होंगे; लेकिन ऐसा नाटक शायद ही पढ़ा हो। इसमें एक बहुत बड़ी सीख है और वह यह कि बुराई का बदला भलाई से दो। दूसरी बात यह बताई है कि यह देह ईश्वर का मंदिर है। इससे कोई बुरा काम न करो। इसे पढ़कर यह भी लगता है कि कोई भी आदमी बुरा नहीं है। वह लाचार होकर बुरे रास्ते पर चलता है। नार्मन निनेल नाम के एक विदेशी लेखक हुए हैं। उनके एक नाटक का नाम है 'दी बिशप्स कैंडिल स्टिक्स'—यानी 'पादरी के दीपदान'। उसीकी कहानी लेकर यह नाटक लिखा गया है। पात्रों के नाम बदल दिए गए हैं। बात उन्हींकी है।

आप खूब ध्यान से इसे पढ़ें और अगर आपको अच्छा लगे तो सरों को भी पढ़वाएं। कबीर ने कहा है :

कबिरा आप ठगाइए, और न ठगिए कोय।
और ठगे दुख होत है, आप ठगे सुख होय॥

यही बात दूसरी तरह से इसमें कही गई है।

—संपादक

ईश्वर का मंदिर

पात्र

१. पुजारी...शिव-मंदिर का पुजारी।

२. जमना...पुजारी की विधवा बहन।

३. रधिया...नौकरानी।

इनके अतिरिक्त पुलिस के दीवान, दो सिपाही व अपराधी।

(स्थान : शिव-मंदिर के कोने में बना पुजारी का घर। समय : जाड़े की एक रात।)

(पुजारी के घर का एक कमरा। बाईं ओर के द्वार के पास एक अंगीठी रखी हुई है, जिसपर देगची चढ़ी हुई है। अंगीठी के ऊपर ही कार्निस पर एक घड़ी और एक चांदी का फूलदान रखा है। अंगीठी के पास ही दो चौकियां और एक बड़ा तख्त बिछा हुआ है। सामनेवाले द्वार की दीवार में एक खिड़की है, जिसके आगे बिछी मेज पर कुछ पुस्तकें पड़ी हैं। पलंग के ऊपर ही दीवार में एक आला है, जिसमें शिव की मूर्ति रखी है। मूर्ति के गले में हार पड़ा है और पैरों

के पास कुछ फूल पड़े हैं। धूप, अगरबत्ती तथा दीपक जल रहे हैं। हल्का-हल्का धुआं वहां से उठता हुआ साफ दिखाई देता है। दाईं ओर की द्वारवाली दीवार के आगे की ओर अंगीठी के बिल्कुल सामने ही एक अलमारी रखी है और उसके सामने एक तख्त बिछा हुआ है। सामने के द्वार के पास ही दाएं कोने में एक पलंग बिछा है, जिसपर बिस्तरे वगैरा पड़े हैं। दीवारों पर जहां-तहां धार्मिक चित्र टंगे हैं तथा कहीं-कहीं कुछ धार्मिक वाक्य लिखे हैं। रधिया अंगीठी पर देगची में दूध उबाल रही है। जमना पास ही पड़ी चौकी पर चादर बिछा रही है।)

जमना : (अपने आपसे) **भैया न जाने कहां चले गए !** (घड़ी की ओर देखकर) **ग्यारह बजने को आगए, अभी तक उनका कोई पता ही नहीं ! रधिया ! ओ रधिया !**

रधिया : **जी, बीबीजी।**

जमना : **भैया मेरे लिए कुछ कह गए हैं ?**

रधिया : **नहीं, बीबीजी।**

जमना : **यह भी नहीं बताया कि कहां जा रहे हैं ?**

रधिया : **जीहां, बताया था, बीबीजी।**

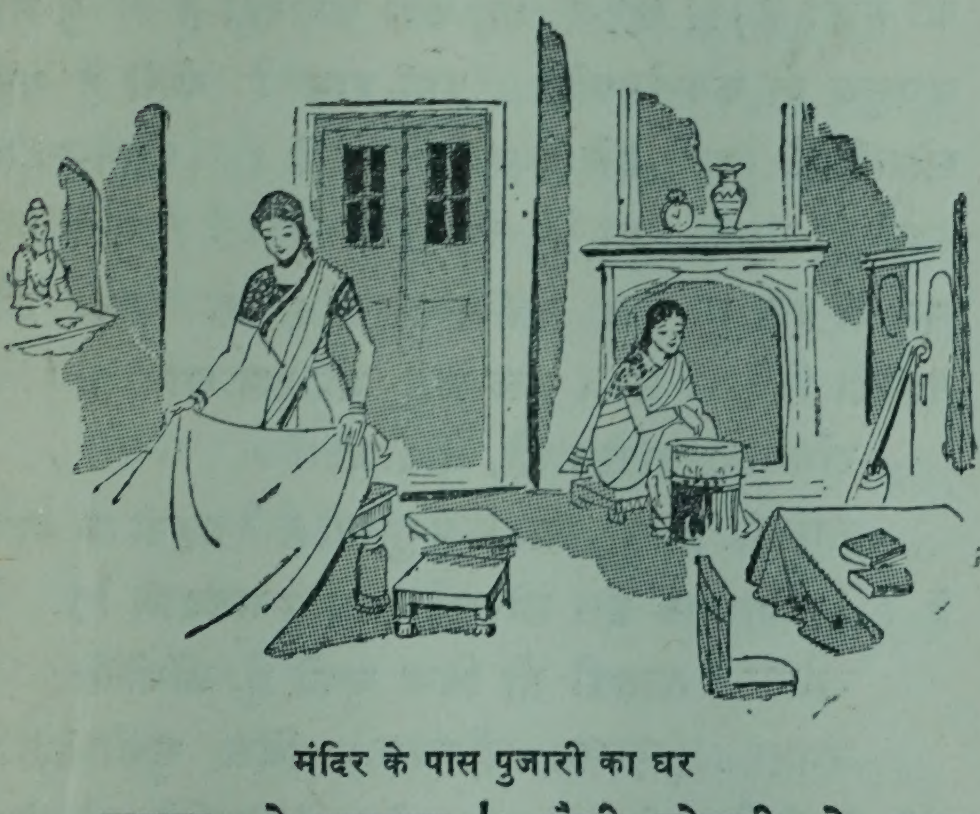
जमना : (रधिया की बात मुंह बनाकर कहते

हुए) बताया था बीबीजी !...तो तूने पहले क्यों नहीं कहा ?

रधिया : आपने पूछा कब था ?

जमना : मैंने नहीं पूछा तो क्या तुझे खुद भी नहीं बताना चाहिए था ? कैसी है री छोकरी तू !

रधिया : सुबह आपने ही तो कहा था कि जबतक तुझसे पूछा न जाय तबतक मत बोला कर। इसलिए मैंने सोचा कि...



मंदिर के पास पुजारी का घर

जमना : हे भगवान ! कैसी छोकरी से पाला पड़ा !...अरी बताती क्यों नहीं ? भैया कहां गए हैं ?

रधिया : मेरी मां को देखने।

जमना : तेरी मां को देखने...हैं !...किसलिए ?

रधिया : वह बीमार है।

जमना : तेरी मां बीमार है, इसलिए मेरा भैया रात को देर तक घर न आए, सोए नहीं, खाना न खाए दूध न पिए...क्यों री !...

रधिया : दूध उबल गया है, बीबीजी।

जमना : फेंक दे उसे... (रधिया ऐसा ही करने को होती है)...अरे-रे, यह क्या कर रही है ? तू तो सचमुच ही फेंकने लगी।...हाय राम ? कैसी है यह छोकरी ! अरी इसे ढककर रख दे। (कहते-कहते स्वयं ही उसके हाथ से देगची ले लेती है) रहने दे। ला, मैं रख दूं। तू जा अलमारी में से चांदी की तश्तरी निकाल ला। कुछ लड्डू भी रख लाना।

रधिया : चांदीवाली, बीबीजी ?

जमना : हां-हां, क्या कम सुनती है ? बहरी तो नहीं है ?...क्या करूं इस छोकरी का ? हे भगवान !...

रधिया : तश्तरी तो बिक चुकी है, बीबीजी।

जमना : (एकदम चौंककर) बिक चुकी है ? कैसे बिकी ? अरी, तू पागल तो नहीं होगई ? उसे कौन बेच सकता है, और क्यों ? बता, बता।

रधिया : आप जब दोपहर को कथा करने गई थीं, पुजारीजी ने उसे देकर मुझसे कहा था कि जा, जितने में भी बिक सके, बेच आ।

जमना : तूने बेच दी ? क्यों री, छोकरी ?

रधिया : मुझसे तो पुजारीजी ने कहा था, बीबीजी।

जमना : पुजारीजी ने ? क्यों ? उन्हें पैसों की ऐसी क्या जरूरत पड़ गई ?

रधिया : शायद धनिया के लिए, बीबीजी।

जमना : धनिया ? कौन धनिया ? ओ, समझी, वह बुढ़िया, जो हनुमान-मंदिर के पिछवाड़े रहती है। काम से जी चुराती है और कहती है, बीमार हूं, चारपाई से नीचे नहीं उतर सकती...उसे किसलिए पैसों की जरूरत पड़ गई ?

रधिया : कोठरी का किराया देने के लिए, बीबीजी। मकान-मालिक ने कह दिया था कि अगर दो दिन के भीतर सारा किराया नहीं चुकता कर देगी तो उससे कोठरी खाली करा ली जाएगी।

जमना : ओह, राम !...यहां तो सबकुछ...ओह, अब क्या होगा ? क्या हमारे पास कुछ भी नहीं बचेगा ? बरतन बिक गए, खाट बिक गई, तख्त बिक

गए। सब जमा किया निकल गया। हाय, कहीं भूखों मरने की नौबत न आजाय। मेरी प्यारी चांदी की तश्तरी भी बिक गई।...हे भगवान, अब क्या होगा ?

रधिया : मुझे माफ करदो, बीबीजी, मुझे बड़ा अफसोस हो रहा है ?

जमना : माफ कर दूं ? तुझे अफसोस हो रहा है ? बड़ी आई है अफसोस करने वाली ! सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। जा, हाथ धोकर आ। वे पाप से गंदे हो गए हैं...

रधिया : जी, बीबीजी।

(बाईं ओर के द्वार की ओर बढ़ती हैं। पुजारीजी सामने के द्वार से प्रवेश करते हैं और अंदर जाकर अपने कपड़े उतारते हैं। जमना उन्हें कपड़े उतारने में मदद देती है। रधिया आती है।)

पुजारी : ओह, जमना, तुम कितनी अच्छी हो ! (उसके चेहरे की ओर देखकर) अरे,...तुम तो रो रही हो।...क्या रधिया ने कुछ किया ?...

जमना : नहीं,

पुजारी : तो फिर क्या हुआ ?...रधिया बेटी, तू अब जा। काफी रात हो गई है। तेरी मां अब ठीक है, वैद्यजी ने दवा दे दी है। ठीक हो जाएगी।

(रधिया अपनी फटी हुई चादर ओढ़कर जाने लगती है) **देख, तेरी मां सो रही होगी, आहिस्ता-आहिस्ता जाना।**

रधिया : **बहुत अच्छा, पुजारीजी।**

(रधिया सामने के द्वार की ओर बढ़ती है। जैसे ही द्वार खोलती है, वर्षा की बौछार एकदम अंदर आती है।)

पुजारी : **ठहर! ले, मेरा छाता ले जा।** (खूंटी से छाता उतारकर देते हैं) **और देख, ठंड भी बहुत है। ले, मेरी गरम चादर ओढ़ जा। ठंड नहीं लगेगी।...**

रधिया : **नहीं, पुजारीजी, यह सब रहने दीजिए। मैं ऐसे ही चली जाऊंगी।...**

जमना : **रहने भी दो, भैया। वह कोई बच्ची थोड़े ही है।**

पुजारी : **ओह, जमना, तुम घर में बैठी-बैठी बात बना रही हो। जरा बाहर निकलकर तो देखो कि कितनी ठंड पड़ रही है। ले जा, रधिया, ले जा; ले यह चादर ओढ़ ले।** (स्वयं ही चादर रधिया को ओढ़ा देते हैं) **अब जा, जल्दी से...** (छाता भी खोल देते हैं, रधिया सामने के द्वार से जाती है।)

जमना : **यह सब मुझे पसंद नहीं है, भैया। अब**

बैठो, दूध पियो। कितनी देर का गरम किया रखा है, रखे-रखे ठंडा होगया होगा...मैं क्या करूं। ठंडा ही पियो...क्यों देर से आए ?

पुजारी : (दूध पीते हुए) ओ हो, बड़े मजेदार है। काफी देर तक ओटाया है न ? क्यों जमना ?

जमना : भैया, रधिया की मां इतनी बीमार नहीं है कि तुम उसके मारे इस सर्दी में इतनी रात तक घर से बाहर रहो। ये लोग बीमार नहीं होते, सिर्फ बहाना करते हैं...तुम्हें देखने के लिए।

पुजारी : यह तो उनकी कृपा है, जो मुझे इतना मान देते हैं।

जमना : पर अपने घर की ओर भी तो देखो। तुम्हारे घर में भी कोई तुम्हारे दर्शनों के लिए बैठा है।

पुजारी : तुम कितनी अच्छी हो, बहन।...(दूध के घूंट भरते हैं) आज दूध बहुत स्वादिष्ट है, सचमुच बहुत स्वादिष्ट। तुम मुझे बड़ी अच्छी लगती हो !...

जमना : क्यों न लगूं ?...मैं न होऊं तो न जाने तुम्हारा क्या हाल हो...हरकोई तुम्हें छल ले। छल-कर जो मर्जी आए, ले जाय...कोई बीमार पड़ा है तो उसकी बीमारी तुम्हारे सिर...दुष्ट लोग तुमसे छल करते हैं और तुम...

पुजारी : क्या कहा, मुझसे लोग छल करते हैं ! गलत, बिल्कुल गलत...असल में तो वे अपने आपसे ही छल करते हैं।

जमना : वे तुम्हारी खिल्ली उड़ाते हैं, भैया ! देखना, तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बचेगा। हरचीज चली जाएगी।

पुजारी : जमना, दुनिया में लोगों को न जाने कितनी-कितनी तकलीफें उठानी पड़ती हैं। मैं उनके लिए कर ही क्या सकता हूं। जो कुछ थोड़ा-बहुत...

जमना : तकलीफें ? लोग दुखी हैं ? हां, सो तो हैं ही...लेकिन कभी तुम उनका भी खयाल करते हो, जो तुम्हें प्यार करते हैं; तुम उन्हें कष्ट देते हो, मुझे भी तुम कितना सताते हो ?

पुजारी : (चौकी से उठते हुए) ओह, जमना, मैंने तुम्हें क्या सताया...ओहो, तुम अभी रो रही थीं... क्या मुझसे कोई कसूर हुआ है ? मैं तुम्हें दुखी नहीं देखना चाहता। मुझे दुःख है...

जमना : अच्छा, अब तुम दूध पियो, ठंडा हो रहा है।

पुजारी : (चौकी पर बैठते हुए) लेकिन बहन, मुझे बताओ तो क्या बात है ?

जमना : भैया तुम तो बच्चों से भी गए-गुजरे हो,

मुझे हर समय तुम्हारी निगरानी करनी पड़ती है, मैं जरा आंखों से दूर हुई कि तुमने रधिया को बुलाया और कह दिया कि जाओ, यह चांदी की तश्तरी बेच आओ।

पुजारी : ओह, वह चांदी की तश्तरी ! मुझे अफसोस है बहन, शायद तुम्हें वह बहुत प्यारी थी !

जमना : प्यारी थी ? अरे, उसपर तो मुझे बड़ा गर्व था। वह हमारे पुरखों से चली आ रही थी।

पुजारी : मगर अब क्या हो सकता है, बहन ? जो होना था सो होगया। अफसोस मुझे भी है ! ओह, वह कितनी सुंदर थी ! पर बहन, लड्डू तो मिट्टी की तश्तरी में भी रखकर खाए जा सकते हैं।

जमना : क्यों नहीं ? धरती पर रखकर भी खाए जा सकते हैं। मैं पूछती हूं, धनिया के पीछे तश्तरी को बेचने की क्या जरूरत थी ? उस दिन मैंने उसे ऐसी-ऐसी सुनाई थीं कि सारी जिंदगी याद रक्खेगी ! इस घर में तो अब वह भूलकर भी पैर नहीं रखेगी।

पुजारी : हां, यह बात तो है, जब मैंने उससे कहा कि अगर साहूकार कोठरी खाली करवाता है तो बेशक कर दे और हमारे घर आकर रहने लगे। पर वह राजी नहीं हुई, शायद तुम्हारे डर से।

जमना : मेरे डर से ?

पुजारी : साहूकार ने कह दिया है कि अब वह और मोहलत नहीं देगा। सो मुझे किराया देना पड़ा।

जमना : तुम्हें देना पड़ा ?

पुजारी : हां, तुम तो जानती हो कि मेरे पास नकद पैसे नहीं रहते, इसलिए वह तश्तरी बेचनी पड़ी। अच्छा हुआ कि वह मेरे ही पास पड़ी थी... (मुस्कराता है) पर तुम्हें इसके लिए दुखी देखकर मुझे बहुत दुःख हो रहा है।

जमना : दुखी ही होते रहो !···ओह, तुम कभी नहीं चेतोगे! एक दिन तुम यह फूलदान भी बेच डालोगे।

पुजारी : नहीं-नहीं, बहन, उसे नहीं बेचूंगा।

जमना : क्यों, क्यों नहीं बेचोगे। उससे भी तो किसीका किराया दिया जा सकेगा।

पुजारी : वाह बहन, तुमने भी कितनी अच्छी बात कही है ! लेकिन सच मानो, मैं उसे नहीं बेचूंगा। मेरी मां ने मरते समय मुझे दिया था ! तुम तो तब पैदा ही हुई थीं। मां ने मुझसे कहा था कि इसे देख-देखकर ही मेरी याद कर लिया करना। मैं इसे नहीं बेच सकता, बहन। लेकिन इसे रखकर भी होगा क्या ? आखिर माया ही तो है !

जमना : ओह, भैया, अब बस करो (उसकी

आंखों में आंसू आ जाते हैं) **मेरा दिल न जाने कैसा हो रहा है। अब मैं सोना चाहती हूं।**

पुजारी : (जमना की पीठ थपथपाता है और सिर पर हाथ फेरता है) **हां, तुम जाकर अब सो जाओ। सारे दिन काम में जुटी रहती हो।**

जमना : (बाईं ओर के द्वार की ओर बढ़ती हुई) **तुम भी सो जाओ...**

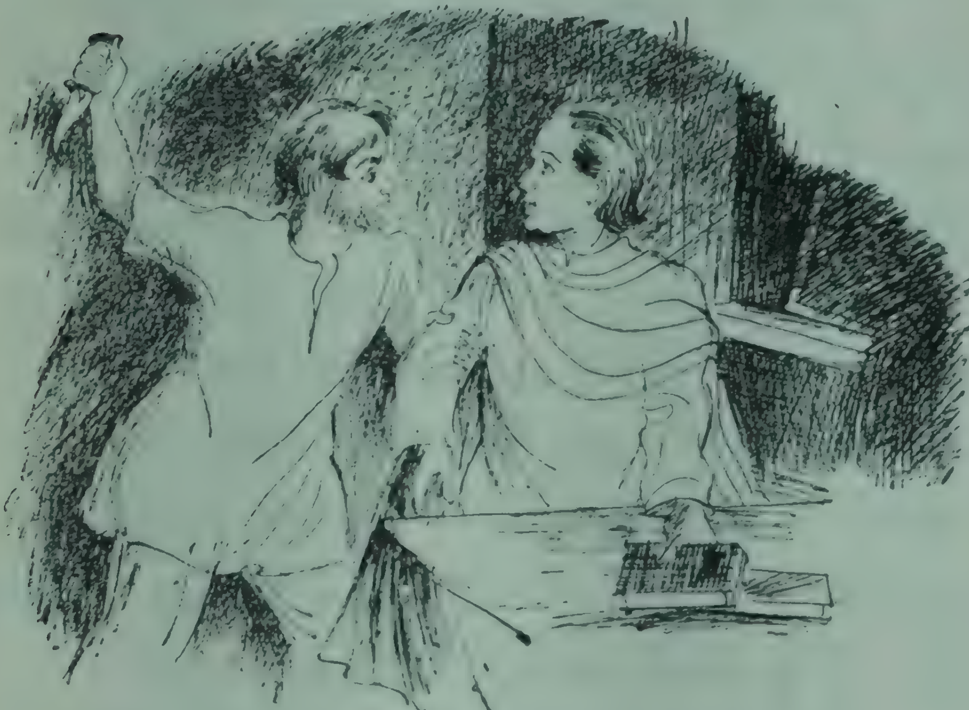
पुजारी : **हां, अब मैं भी सोता हूं।**

(जमना चली जाती है। पुजारी मेज पर आकर एक किताब खोलता है। फिर फूलदान की ओर देखता है।)

पुजारी : **इससे भी किसीका किराया दिया जा सकेगा...कितनी अच्छी बात सोची उसने?** (अंगीठी के पास किताब उठाकर लाता है, हाथ सेंकता है। बत्ती कुछ ऊंची कर देता है। फिर मेज के कागज और किताबें उलटता-पलटता है। बाहर से घंटाघर के बारह घंटे सुनाई पड़ते हैं। पुजारी किताब खोलकर पढ़ने का उपक्रम करता है। सहसा एक व्यक्ति, जिसके बाल बढ़े हुए हैं, कपड़े मैले हैं, चुपके-चुपके सामने के द्वार से अंदर घुसता है। उसके हाथ में एक बड़ा चाकू है। आकर वह फुरती से पुजारी को पीछे से

पकड़ लेता है)

अपराधी : खबरदार ! चिल्लाए तो जान से मार



अपराधी पुजारी पर चाकू उठाते हुए

दूंगा ।

पुजारी : लेकिन, मेरे दोस्त, मैं क्यों चिल्लाने लगा...देखते नहीं, मैं पाठ कर रहा हूं। क्या तुम्हें मेरी मदद चाहिए ?

अपराधी : मुझे रोटी चाहिए। मैं भूखा हूं। तीन दिन से मैंने कुछ नहीं खाया। मुझे जल्दी रोटी दो... जल्दी...जल्दी, नहीं तो अभी मार डालूंगा।

पुजारी : तुम्हें रोटी चाहिए ? सब्र करो, मिल

जाएगी। मैं अपनी बहन को जगाता हूं। वह तुम्हें रोटी दे देगी। (उठने की कोशिश करता है।)

अपराधी : उठने की कोशिश मत करो, बैठे रहो। (पुजारी मुस्कराते हुए बैठ जाता है) क्यों बच्चू, मुझे ही धोखा देना चाहते हो ! पर मैं इन फरेबों में आसानी से फंसनेवाला पंछी नहीं । तुम अपनी बहन को जगाने जाओगे ! हैं ! क्या बहाना बनाया है ? हा-हा-हा...और बाहर जाकर शोर मचा देना "चोर-चोर, पकड़ो-पकड़ो।" वहां जाने और अपनी बहन को जगाने की कोई जरूरत नहीं। मुझे बता दो, कहां रखा है खाना। मैं अपने आप ले लूंगा। मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं। जल्दी बताओ, खाना कहां रखा है।

पुजारी : मेरा खयाल है कि खाना इसी अलमारी में रखा है। मेरे दोस्त, घबराने की कोई बात नहीं है। मैं और मेरी बहन यहां अकेले ही रहते हैं।

अपराधी : इसका मैं कैसे यकीन कर सकता हूं ?

पुजारी : मैं ठीक ही कह रहा हूं...

अपराधी : (पुजारी की ओर तीखी दृष्टि से देखते हुए) हूं, कोई बात नहीं। यह खतरा भी मोल ले सकता हूं। (पुजारी की बाईं तरफ के द्वार की ओर बढ़ता है) लेकिन अगर मेरे साथ दगा करने की

कोशिश की तो बस, (चाकू दिखाता है) सीधा छाती में उतार दूंगा। हां, मेरा कुछ नहीं जाएगा।

पुजारी : मेरे दोस्त ! मेरा भी कुछ नहीं जाएगा, तुम अपनी ही आत्मा बेचोगे, (सामने के द्वार के बीच में खड़े होकर) जमना ! ओ जमना !

(अपराधी पुजारी के पीछे छुरा तानकर खड़ा हो जाता है।)

जमना : (अंदर से ही) हां, भैया, क्या बात है ?

पुजारी : जरा यहां तो आओ। देखो, कोई मुसाफिर आया है, बिचारा बहुत भूखा है, अगर अभी लेटी न हो तो तुम उसके लिए एक थाली में खाना लगा दो।

जमना : अब ? इस समय ? इतनी रात गए ? ओह, तुम भी भैया, क्या मुसीबत मोल ले लेते हो ? मैं पूछती हूं कि क्या हमारी किस्मत में सोना भी नहीं बदा है ?

पुजारी : लेकिन सोचो तो बहन, वह बहुत भूखा है।

जमना : अच्छा-अच्छा, आ रही हूं (सामने के द्वार से भीतर आती है, अपराधी के हाथ में चाकू देखकर डर जाती है) उफ, भगवान ! यह इसके हाथ में चाकू कैसा है ?...

पुजारी : ओह चाकू ? अरे बहन, इसने सोचा,

शायद हमारे पास चाकू न हो, इसलिए बेचारा पहले ही लेता आया, (हल्के-हल्के हँसता है)

जमना : (आहिस्ता से, जैसे कान में कह रही हो) **मुझे तो डर लग रहा है, भैया; कैसा राक्षस की तरह घूर-घूरकर देख रहा है ?**

अपराधी : **मैं कहता हूं, जल्दी करो, जल्दी, नहीं तो मैं तुम दोनों को मार डालूंगा। हां, दोनों को, और अपने आप खाना ले लूंगा।**

पुजारी : **मुझे बता दो, बहन, खाना कहां रखा है ? मैं अपने आप खिला दूंगा।**

जमना : **अलमारी में रखा है,**

पुजारी : **तो तुम जाओ और आराम करो, दिन-भर की थकी हुई हो, मैं अपने आप सब कर लूंगा।**

(जमना जाने लगती है, अपराधी एकदम उसका रास्ता रोककर खड़ा हो जाता है।)

अपराधी : **नहीं, तुम भी यहीं ठहरो, तुममें से कोई भी मेरे जाने से पहले यहां से नहीं जा सकता।**

पुजारी : **कोई बात नहीं, जमना। बैठ जाओ। इसे पहले चैन से खाना खा लेने दो।**

(जमना घबराकर वहीं एक ओर चौकी पर बैठ जाती है, पुजारी अलमारी में से थाली निकालकर

(उसमें खाना परोसता है।)

पुजारी : यह रहे, लड्डू...कचौड़ी...और... अरे जमना, तुमने तो दूध भी रख दिया। सच, तुम कितनी अच्छी हो!

अपराधी : यह सब यहां चौकी पर रख दो और तुम दोनों यहीं जमीन पर मेरी आंखों के सामने बैठ जाओ, ताकि मैं तुम्हें देखता रहूं।

(पुजारी और जमना दोनों उसके सामने जमीन पर बैठ जाते हैं।)

अपराधी : वाह, मजा आगया, अगर जेल में भी ऐसा खाना मिलने लगे तो?...मगर...

चमना : जेल?

अपराधी : (कचौड़ी मुंह में ठूंसते हुए) यह क्या? (द्वार की ओर देखता है) ओह...तुम अपने दरवाजे भी खुले छोड़ देते हो, ऐसे तो कोई भी अंदर आ सकता है। (सब द्वार बंद कर आता है।)

पुजारी : वह इसीलिए तो खुले छोड़े जाते हैं कि कोई भी आ सके।

अपराधी : कोई बात नहीं, मैंने सब ठीक कर दिया है, अब कोई अंदर नहीं आ सकता।

पुजारी : ओह, तीस साल होगए मुझे इस मंदिर

में, मगर कभी एक दिन के लिए भी ये दरवाजे बंद नहीं हुए, आज पहली बार...

(अपराधी पानी पीकर वहीं फर्श पर कुल्ला कर देता है।)

जमना : हाय, सारा फर्श गंदा कर दिया, मैंने आज ही तो इसे लीपा था।

(पुजारी एक कपड़ा लेकर फर्श पोंछ देता है।)

अपराधी : क्योंजी, तुम्हें चोरों से डर नहीं लगता ?

पुजारी : मुझे उनपर दया आती है।

अपराधी : दया आती है...हू हू हू...हो-हो-हो... खूब कही ! दया आती है ?...तुम भी अजीब हो !

पुजारी : मैं पुजारी हूं।

अपराधी : पुजारी ?...हो-हो-हो...हा-हा-हा ! पुजारी...खूब, बहुत खूब ! तब तो तुम जरूर मुझे शाप दे दोगे।

पुजारी : नहीं, मेरे दोस्त, मुझे तुमपर दया आ रही है, तुम्हें शाप नहीं दूंगा। जमना, अब तुम चली जाओ। अब मुसाफिर को आपत्ति नहीं होगी।

जमना : चली जाऊं ? तुम्हें इसके पास अकेला छोड़कर ?

पुजारी : हां, हम तभी आपस में खुलकर बात कर सकेंगे। जाओ जमना।

अपराधी : हां...हां, अब तुम जा सकती हो। तुम लोग भले मालूम पड़ते हो।

पुजारी : हां, हां, जाओ, जमना, जाओ।

(पुजारी द्वार खोलता है और जमना सामने के द्वार से चली जाती है।)

अपराधी : (अपने आपसे) हा-हा...पुजारी... पुजारी...हा-हा...(पुजारी के कंधे पर हाथ रखता है) जानते हो, मैं कौन हूं ?

पुजारी : हां, लगता है, तुम कोई मुसीबतजदा हो।

अपराधी : मुसीबतजदा ? मुसीबतजदा ? भगवान तुम्हारा भला करे। लेकिन वह तो मैं बहुत पहले था। तब मैं इंसान था। अब मैं हैवान हूं, दरिंदा हूं, अब मैं नंबरिया हूं। मेरा नंबर है १५७२९ और मैं नरक में भी तो रह चुका हूं। लगातार दस साल तक, समझे!

पुजारी : भैया, मुझे भी नरक के बारे में कुछ बताओ।

अपराधी : क्यों ? ताकि तुम पुलिस में रिपोर्ट कर सको। मेरे साथ फरेब करना चाहते हो !

पुजारी : नहीं, मैं पुलिस को कुछ भी नहीं

बताऊंगा।

अपराधी : कुछ-कुछ यकीन तो तुमपर करने को जी चाहता है। (सिर खुजाता है) मगर यह एकदम कैसे मान लूं कि तुम नहीं बताओगे ?

पुजारी : मुझे नरक में जाने से पहले की कहानी सुनाओ—तब की जब तुम इंसान थे।

अपराधी : अब तो उन बातों को अर्सा हो गया है......शायद मैं भूल भी गया होऊं ? लेकिन फिर भी याद करके तुम्हें बताने की कोशिश करता हूं। (सोचता है) हां, मेरे पास एक छोटी-सी झोंपड़ी थी। उसके बाहर थोड़ी-सी जमीन थी, जिसपर बेलें लहराया करती थीं। (जैसे सपनों के संसार में खो गया हो) और जिनमें सुंदर-सुंदर फूल लगा करते थे। उस झोंपड़ी में एक स्त्री रहती थी। (सिर खुजाता है) कौन थी वह ? (सोचता है) हां, याद आया, वह मेरी ही औरत थी। औरत। वह बीमार थी पर हमारे पास दवाई के लिए पैसे नहीं थे। खाने के लिए भी नहीं थे। कहीं काम भी नहीं मिल रहा था। मैं मजदूर था। बरसात के मौसम में कहीं काम नहीं मिला...मेरी औरत बहुत बीमार थी। उसके बच्चा होने वाला था। वह बहुत तकलीफ में थी और

मेरे पास उसे खाना खिलाने तक को पैसे नहीं थे। तब मैंने चोरी की। (कुछ क्षण रुककर) पुलिस ने मेरा पीछा किया। मैं पकड़ा गया। मैंने उनसे कहा कि चोरी मैंने जान-बूझकर नहीं की। मेरी बात सुनकर वह हँसने लगे। फिर मुझे दस साल के लिए जेल भेज दिया। हां, दस साल तक मैं नरक में रहा! जेल में मुझे एक दिन चौकीदार ने बताया कि मेरी औरत मर गई। (उसकी आँखें छलछला आती हैं) ओफ! कितनी अच्छी थी वह! मैं उसे खाना भी न खिला सका। (सिर पकड़कर चौकी पर बैठ जाता है)

पुजारी : अब मुझे नरक के बारे में बतलाओ।

अपराधी : जल्दी मत करो। सब बता दूंगा। देखो नरक में जाने से पहले मैं इंसान था। मगर अब मैं हैवान हूं, और यह मुझे नरक में बनाया गया है। मुझे एक जंगली जानवर की तरह जंजीरों में बांधा जाता था। कोड़ों की मार पड़ती थी। सड़ी हुई रोटियां खिलाई जाती थीं। मच्छरों की कोठरी में बंद किया जाता था। शिकायत करता तो मुझपर कोड़े पड़ते थे। हां, कोड़े...दस साल तक मुझे ऐसे ही रखा गया।...अब मेरा कोई नाम नहीं है, मेरी आत्मा भी नहीं है। अब तो उस इंसान की जगह एक हैवान रह गया है।...एक दिन

चौकसी करने में वे ढील कर गए। इस जंगली जानवर को जंजीरों से बांधना भूल गए और यह मौका पाकर भाग निकला। दो महीने की बात है। मैं आजाद होगया....आजाद....लेकिन भूखों मरने लगा....

पुजारी : भूखों ?

अपराधी : हां, भूखों। जेल में कम-से-कम खाना तो देते थे, जेल से बाहर तो भूखों ही मरना पड़ता था। पुलिस मेरी टोह में थी, मगर कोई मुझे जानता नहीं था....मैं रोज अपने लिए रोटी चुरा लेता। किसी सुनसान जगह में सोने के लिए पड़ रहता। काम की मैंने तलाश नहीं की। शहर में जाना मेरे लिए खतरनाक था, मैं चोरियां करने लगा। आज भी करता हूं....चोरियां....मैं चोर हूं, चोर, सत्यानाश हो इन पाजियों का। क्या-से-क्या बना दिया मुझे।

पुजारी : तुमने बहुत दुःख उठाए हैं, मगर यकीन रखो, तुम्हारे आगे आनेवाले दिन बड़े उजले हैं।

अपराधी : सच ?....हा-हा-हा....(उसके हँसने से जंगलीपन जाहिर होता है)

पुजारी : तुम बहुत दूर से चलकर आए हो, थक गए होगे; उठो, उस पलंग पर आराम करो, मैं तुम्हारे लिए रजाई लाता हूं।

अपराधी : **और अगर कोई मुझे देख ले तो ?**

पुजारी : **यहां तुम्हें देखने कोई नहीं आएगा और अगर कोई आवेगा भी तो तुमसे कुछ नहीं कहेगा। क्या तुम मेरे दोस्त नहीं हो ?**

अपराधी : **तुम्हारा दोस्त ?** (सिर खुजाता है)

पुजारी : **हां-हां, पुजारी के दोस्त को यहां कोई तंग नहीं करता।**

अपराधी : **पुजारी का दोस्त ?** (सिर खुजाता है जैसे बिल्कुल ही चक्कर में पड़ गया हो)

पुजारी : **मैं तुम्हारे लिए रजाई लाता हूं** (दाईं ओर के द्वार से अंदर जाता है)

अपराधी : (सिर खुजाता है) **पुजारी का दोस्त।**··· (अंगीठी के पास जाता है। जैसे ही बैठने लगता है, उसकी नजर फूलदान पर पड़ती है। इधर-उधर देखता है कि कोई है तो नहीं। किसीको न पाकर चुपके से फूलदान उठा लेता है और हाथों से उसका वजन तौलता है।) **काफी भारी है। चांदी का है, ठोस चांदी का।···क्या चीज पाई है ! वाह, भगवान।···**

(पुजारी के पैरों की आहट सुनाई पड़ती है। अपराधी जल्दी में फूलदान को चौकी पर रख देता है। पुजारी प्रवेश करता है और अपराधी की सब हरकत देख

लेता है। फिर रजाई लेकर चौकी की ओर बढ़ता है।)

पुजारी : (रजाई रखते हुए) तो यह फूलदान तुम्हें पसंद है? वास्तव में है भी सुंदर! मुझे इसपर गर्व है। यह मुझे मेरी मां ने मरते समय दिया था। यों तो इसकी जरूरत नहीं है, पर यह मुझे मां की याद दिलाता रहता है। लो, तुम्हारा बिस्तर तैयार है। सो जाओ।

अपराधी : हां-हां, अभी सोता हूं। लेकिन यह तुम क्या कर रहे हो? मेरे साथ बहुत मेहरबानी बरत रहे हो। कहीं मुझे फंसाना तो नहीं चाहते?

पुजारी : मैं तो सिर्फ यह चाहता हूं कि तुम चैन से सो जाओ और अपनी थकान मिटाओ।

अपराधी : हूं! तो तुम मेरा उद्धार करना चाहते हो। मुझे बदलना चाहते हो। क्यों,....भगवान भला करे तुम्हारा....। लेकिन देखो, इस सबका मुझपर कुछ असर नहीं पड़ने वाला है। मुझे तुम्हारा करम-वरम नहीं चाहिए। और यह मंदिर सब फरेब है।

पुजारी : मुझे तुमपर रहम आता है। आखिर मंदिर से तुम्हें क्या चिढ़ है?

अपराधी : तो तुम मुझे बदलना चाहते हो? मुझे हैवान से इंसान बनाना चाहते हो? हा-हा-हा....हो-हो-हो....पुजारीजी, मुझे यह सबकुछ नहीं चाहिए।

तुम्हारा यह सब फिजूल जाएगा। मुझपर कुछ असर नहीं होगा। यों समझ लो, जैसे सबकुछ एक शैतान के लिए कर रहे हो। मुझे तुम्हारे धरम और आत्मा-वात्मा में जरा भी विश्वास नहीं है। समझे?

पुजारी : मेरे दोस्त, ईश्वर की थोड़ी सेवा करने के लिए भी शैतान की बहुत सेवा करनी पड़ती है।

अपराधी : मुझे नहीं चाहिए धरम-वरम...एक बार कह तो दिया मैंने

पुजारी : तुम सोओगे नहीं ? रात काफी होगई है।

अपराधी : अच्छा-अच्छा...लेकिन मुझे उपदेश मत देना। मैं अब सोना चाहता हूं। (बिस्तर पर लेट जाता है) तुम्हें यकीन है न, यहां कोई नहीं आएगा।

पुजारी : हां, यहां कोई नहीं आएगा और आएगा भी कैसे ? तुमने दरवाजा जो बंद कर दिया है।

अपराधी : लेकिन खतरा फिर भी है (उठकर सब दरवाजे अच्छी तरह से देखता है, मुड़कर देखता है कि पुजारी रजाई उठाए खड़ा हुआ है) अरे, अभी तक यहीं खड़े हो। जाओ न, मैं कोई बच्चा नहीं हूं। अपने आप ओढ़ लूंगा।

पुजारी : अच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा...

(दाईं ओर के द्वार से जाता है। अपराधी उसे जाता

हुआ ध्यान से देखता है, फिर उसका बंद किया हुआ दरवाजा खुद जाकर देखता है।)

अपराधी : **ताला नहीं लगाया ! भगवान तेरा भला करे** (आस-पास देखकर दृष्टि फूलदान पर जमा देता है) **कितना भला मालूम देता है।** (हाथों में उठाकर खिलौने की तरह हिलाता है) **कुछ भी नहीं तो....कम-से-कम सौ रुपये का तो होगा ही। ठोस चांदी का है। बेचकर सौ रुपये मिल जायं तो....बस, मजा आ जाय....बच्चू को यह बहुत प्यारा लगता है। कहता है कि मां ने दिया था। ओह ! जब मुझे जेल भेजा था तो मेरी मां का भी किसीने खयाल किया था ? पुजारी ने मुझपर बहुत दया की है, पर इसके अलावा पुजारी का और काम भी क्या हो सकता है ? आह ! अगर यह चोरी करते हुए मुझे सिपाही सकुचाते देखेंगे तो हँसेंगे। कहेंगे कच्चा चोर है....हा-हा-हा....हो-हो-हो। भगवान भला करे। मुझे यह फूलदान लेकर चल देना चाहिए। अब मैं यहां और ज्यादा ठहरा तो वह मुझे फिर उपदेश देने लगेगा और हो सकता है, मैं बदल ही जाऊं। पर मुझे यह सब नहीं चाहिए।**

(फूलदान अपनी जेब में डाल लेता है और चुपके से सामने के द्वार से बाहर निकल जाता है। जैसे ही

वह द्वार खोलता है, द्वार की चरमराहट होती है ।)

जमना : (दूसरे कमरे से) **कौन है ? कौन ? क्या आज रात सोने भी दोगे या नहीं ? कौन है ?** (प्रवेश करती है) **मुझे साफ-साफ आवाज आई थी दरवाजा बंद होने की ।** (कमरे में इधर-उधर देखती है) **हैं, यहां तो कोई भी नहीं है ।** (दाईं ओर के द्वार को खटखटाती है । अंगीठी पर देखती है, फूलदान नहीं है ।) **आह ! फूलदान लेगया लेगया भैया, वह**



अपराधी जेब में फूलदान डाल लेता है

फूलदान ले गया।....चोर ! चोर ! भैया, चोर, चोर।

(पुजारी प्रवेश करता है।)

पुजारी : क्या हुआ, जमना ? क्या हुआ ?

जमना : वह भाग गया, भैया। वह राक्षस भाग गया और तुम्हारा फूलदान भी ले गया।

पुजारी : नहीं-नहीं वह उसे नहीं ले जा सकता। (अंगीठी की ओर देखकर) उफ ! बड़ा जुल्म किया उसने। इसे कैसे सहूं ? ओह, वही तो मेरा सबकुछ था। ओह, मां।

जमना : रोने से क्या होगा, भैया ? जाओ, जल्दी थाने में खबर कर दो। वह अभी दूर नहीं गया होगा ? फूलदान मिल जाएगा। तुम उसके योग्य नहीं हो। तुम्हें उसकी परवा भी कहां थी।

पुजारी : ठीक कहती हो, जमना ! यह मेरा ही दोष था। मैंने उसे लालच दिया था।

जमना : तुमने क्या लालच दिया था ? वह तो चोर था। मैं तो उसे देखते ही पहचान गई थी। वह राक्षस था। अब जल्दी करो, पुलिस में खबर कर दो। तुम नहीं जाते तो मैं चली जाऊंगी।

(जाने लगती है, लेकिन पुजारी उसे पकड़ लेता है।)

पुजारी : नहीं-नहीं, जमना, रहने दो। बेचारा पकड़ा जाएगा तो फिर जेल भेजा जाएगा...नरक में नहीं, जमना, असल में मैं ही उसके योग्य नहीं था। लेकिन...उफ ! मां ! (अपना सिर दीवार से टेककर खड़ा हो जाता है)

जमना : नहीं भैया, मुझे यह बात पसंद नहीं है। अगर तुम पुलिस को खबर नहीं कर सकते तो मैं करे देती हूं; मैं ऐसे खड़ी-खड़ी अपना घर लुटते हुए नहीं देख सकती। मैं जाती हूं, भैया। तुम बहुत अच्छे हो, बहुत अच्छे ! लेकिन कुछ बुद्धू भी। मैं अभी जाकर पुलिस को खबर करती हूं।

पुजारी : नहीं-नहीं, जमना। फूलदान मेरा था। अब वह उसका है। उसीके पास ठीक है। मुझसे ज्यादा उसे उसकी दरकार है। मां होतीं तो वह भी उसे दे देतीं।

जमना : लेकिन, भैया....

(द्वार पर जोर से खटखटाहट होती है।)

(बाहर से आवाज आती है) पुजारीजी, पुजारीजी, जरा दरवाजा खोलिए।

पुजारी : आ जाइए, दरवाजा खुला हुआ है।

(दीवानजी और उनके साथ दो सिपाही अपराधी

को बांधे हुए लाते हैं। एक के हाथ में फूलदान है।)

जमना: अरे, तुम पकड़े गए? बदमाश कहीं के!

दीवान: हां, बहन, हमने इस बदमाश को सड़क पर आवारा घूमते हुए देखा तो इसका नाम पूछा। मगर इसने अपना नाम न बताया। हमें शक हुआ।



सिपाही अपराधी को पकड़कर लाए

पकड़ लिया। हट्टा-कट्टा तो है ही। जल्दी से पकड़ में नहीं आया। धक्कामुक्की करने लगा। बस, तभी इस-की जेब से यह फूलदान निकलकर जमीन पर गिर

पड़ा (फूलदान जमना हाथ में ले लेती है। अपने हाथ उसपर फेरती है।) मैंने इसे एक बार पहले आपके यहां देखा था। सो मैं इसे यहीं ले आया।

(पुजारी और अपराधी एक-दूसरे की ओर देखते हैं। अपराधी शरम के मारे सिर झुका लेता है।)

पुजारी : लेकिन समझ में नहीं आता, यह तो मेरा दोस्त है। अभी-अभी तो गया था।

दीवानजी : आपका दोस्त ? यह क्या कह रहे हैं आप, पुजारीजी ?

पुजारी : हां दीवानजी, यह मेरा दोस्त है। आज रात इसका मेरे यहां खाने पर निमंत्रण था। यह फूलदान मैंने इसे भेंट में दिया है।

दीवानजी : (सिर खुजाते हुए) आपने इसे भेंट में दिया है ? आपने इसे....भगवान भला करे।

पुजारी : हां, आप इसे छोड़ दीजिए। यह चोर नहीं है, जैसा आप समझ रहे हैं।

दीवानजी : लेकिन यह अपना नाम तक नहीं बताता। हमें शक है

पुजारी : दीवानजी, आप मुझे जानते हैं। क्यों ? यह मेरा दोस्त है और मैंने ही इसे यह फूलदान भेंट

में दिया है। क्या आपको यकीन नहीं आता ?

दीवानजी : ठीक ।....लेकिन

पुजारी : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। इसे छोड़ दीजिए।

(दीवानजी और पुजारी एक-दूसरे को पल भर देखते हैं।)

दीवानजी : (सिपाहियों से) खोल दो इसे। (सिपाही खोल देते है) चलो....अच्छा, पुजारीजी, राम-राम....

(दीवानजी और सिपाही चले जाते हैं। कुछ देर तक खामोशी है।)

अपराधी : (बहुत धीमे-धीमे, जैसे स्वप्न से जागा हो) आपने उनसे कहा कि यह आपने मुझे भेंट में दिया है। भगवान, भला करें आपका।

जमना : (अपराधी पर अपना मुक्का तानती हुई और फूलदान अपनी छाती से चिपकाती हुई) बदमाश ! चोर ! डाकू ! तुझे खाना खिलाया, बिस्तरा दिया। सांप ! जिसका दूध पीते हो उसी-को डसते हो। ओह !....दुराचारी ! तेरा सत्यानाश हो !

पुजारी : जमना, शायद तुम बहुत थकी हुई हो। जाओ, सो जाओ।

जमना : क्या कहा, चली जाऊं ? तुम्हें इस हैवान के पास छोड़कर, ताकि यह फिर दगा कर सके ? या कहीं जान से ही हाथ धो बैठो....नहीं, मैं नहीं जाऊंगी ।

पुजारी : जमना, मैं कहता हूं, चली जाओ ।

(जमना उसकी ओर तेज निगाह से देखती है। फिर द्वार की ओर बढ़ती है।)

जमना : अच्छा, मैं जाती जरूर हूं; लेकिन यह फूलदान अपने साथ लिये जाती हूं ।

पुजारी : नहीं, जमना । इसे यहीं मेज पर रख दो और चली जाओ ।

जमना : नहीं, अब मैं इसे यहां नहीं छोड़ूंगी।

पजारी : (डांटते हुए) नहीं, जमना, कहना नहीं सुनोगी ? अपने भाई का कहना नहीं मानोगी ? तो फिर मेरी यह आज्ञा है, जमना, इसे यहीं रख दो ।

(जमना अनिच्छापूर्वक फूलदान चौकी पर रख देती है और बाईं ओर के द्वार से चली जाती है ।)

अपराधी : अच्छा हुआ, पुजारीजी, मैं पकड़ा गया । मैं उसे नहीं ले जा सका । अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ । मुझे जो जी चाहे दंड दीजिए । मैं अपराधी हूं ।

पुजारी : तुम्हारा बिस्तर तैयार है। जाओ, सो जाओ।

अपराधी : (आंखें डबडबा आती हैं।) नहीं-नहीं मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। अब मुझे यहां से चले जाना चाहिए--दूर, बहुत दूर, जहां मुझे कोई पकड़ न सके....और मैं अपराध न करूं। दूर बहुत दूर....मुझे अभी रात को ही चले जाना चाहिए।

पुजारी : क्या कहा ? अभी रात को ही चले जाना चाहिए ? हां, ठीक कहते हो। तुम्हें सवेरा होने से पहले ही चले जाना चाहिए।

अपराधी : (पुजारी के पैर पकड़ लेता है) मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि दुनिया में भलाई बाकी है।....और नरक में रहनेवाला कीड़ा यह जान भी कैसे सकता है ? आप बहुत अच्छे हैं, पुजारीजी ! आप देवता हैं। मैं इसका अधिकारी तो नहीं हूं, पर मुझे आशीर्वाद दीजिए। जाने से पहले मुझे क्षमा कर दीजिए। (उनके पैरों पर सिर रख देता है)

पुजारी : (उसे उठाते हुए) ईश्वर तुम्हें सद्-बुद्धि दे।

अपराधी : (कुछ कहने का प्रयत्न करता है। लेकिन सिसकियों के मारे मुंह से आवाज ही नहीं निकलती)

प्र णा म...(पैर छूकर जाने लगता है।)

पुजारी : ठहरो, मेरे दोस्त ! तुम अपनी चीज तो भूले ही जा रहे हो। (फूलदान उसे देता है)

अपराधी : नहीं-नहीं। नहीं, पुजारीजी, अब मुझे और अधिक....मैं बहुत शर्मिंदा हूं। मुंह भी नहीं दिखा सकता। आप....आप....

पुजारी : अरे, भई, यह तो तुम्हारा ही है। ले जाओ, तुम्हारे काम आवेगा।

(अपराधी उसे कांपते हाथों से अनिच्छापूर्वक ले लेता है) देखो, यहां जंगल से एक रास्ता दूसरे शहर को जाता है। मंदिर के पीछे ही बिल्कुल जंगल है--सुनसान, बिल्कुल अकेला। तुम इसी रास्ते से चले जाओ ! तुम्हें कोई नहीं देख पावेगा।

अपराधी : ओह, पुजारीजी ! (उसकी सिसकियां अब भी बंधी हुई हैं।) मैं नादान हूं, मूर्ख हूं, अपराधी हूं। लेकिन आपने....ओह, मुझे लग रहा है, मैं हैवान से इंसान बन गया हूं।....

(पुजारी सामने का द्वार खोल देता है, पर अपराधी बीच में खड़ा हो जाता है।)

पुजारी : (अपना हाथ अपराधी के कंधे पर रखते हुए) मेरे दोस्त ! सदा याद रखना यह तुच्छ शरीर

ईश्वर का मंदिर है। इसमें पवित्रता और सत्यता वास करती है....



"यह शरीर ईश्वर का मंदिर है।"

अपराधी : याद रखूंगा....ईश्वर का मंदिर.... इसमें पवित्रता और सत्यता वास करती है....याद रखूंगा।

(सामने के द्वार से जाता है। पुजारी द्वार बंद करके खिड़की के पास आता है और एक पुस्तक उठाकर पढ़ने लगता है।)

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

बद्रीनाथ
जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा

मूल्य प्रत्येक का छः आना

४८

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना